2. चित्रकला एवं कला के अन्य रूप

(PAINTINGS & OTHER ART FORMS)

2.1. आधुनिक चित्रकला

(Modern Painting)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल की प्रदर्शनियों का गूगल आर्ट एंड कल्चर प्रोजेक्ट द्वारा लाइव शो प्रसारित किया गया, जिसमें प्रदर्शित सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग्स में **अबनींद्रनाथ की भारतमाता** थी।

आधुनिक भारतीय चित्रकला (Modern Indian Painting)

भारतीय कला का आधुनिक काल लगभग 1857 के आसपास आरंभ हुआ। आधुनिक युग में पेंटिंग की विभिन्न शैलियाँ इस प्रकार हैं:

- **चित्रकला की कंपनी शैली (Company Style of painting):** यह चित्रकला की एक संकर (hybrid) शैली है। यह औपनिवेशिक काल में उभरी। यह राजपूत, मुगल और पेंटिंग की अन्य भारतीय शैलियों को यूरोपीय तत्वों के साथ मिश्रित करती है।
- **बाजार चित्रकला (Bazaar Painting):** कंपनी चित्रकला के विपरीत, इसने यूरोपीय तकनीक के साथ भारतीय शैली को मिश्रित नहीं किया। इन्होंने सिर्फ ग्रीक और रोमन शैली की नकल की। यह शैली बंगाल और बिहार में प्रचलित थी। इन चित्रों में भारतीय बाजारों को यूरोपीय पृष्ठभूमि के साथ प्रदर्शित किया जाता था।
- **कालीघाट चित्रकला(Kalighat Painting):** इसे कपड़ों या पटों पर किया जाता है जो कि बंगाल में कालीघाट के मंदिर के आस-पास विकसित होना शुरू हुई जहां स्थानीय ग्रामीण स्क्रॉल पेंटर्स (जिन्हें पटुआ कहा जाता था) और कुम्हारों ने परंपरागत चित्रकला में नई विशिष्टताओं को प्रयुक्त करना प्रारंभ किया था जैसे -
  - चित्र को घेरेदार (rounded) रूप देने (3- D प्रभाव) के लिए छायांकन का प्रयोग।
  - एक सुस्पष्ट, सुविचारित गैर-यथार्थवादी शैली का प्रयोग, जहां चित्र न्यूनतम लाइनों, विवरणों और रंगों के संयोजन से बड़े और प्रभावशाली बनकर उभरे।
  - पूर्व काल के केवल धार्मिक विषयों के विपरीत सामाजिक और राजनीतिक विषयों की चित्रकलाएं।

आधुनिक चित्रकला के प्रमुख प्रतिपादक **राजा रवि वर्मा** (शानदार (brilliant) ब्रश प्रयोग और जीवंत पेंटिंग्स के कारण उन्हें **"पूर्व का राफेल"** कहा जाता है), **अबनींद्र नाथ टैगोर** आदि हैं। अबनींद्र नाथ टैगोर की 'भारतमाता' (1905) मातृभूमि की भावना का पहला विशुद्ध भारतीय विचार था।

2.2. कठपुतली

(Puppetry)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, 21 मार्च को विश्व कठपुतली दिवस के रूप में मनाया गया।

भारत में कठपुतली (Puppetry in India)

- कठपुतली कला का सबसे पहला संदर्भ तमिल शास्त्र **'शिलाप्पदिकारम'** में मिलता है। लगभग यह पहली या दूसरी सदी ई. पू.लिखा गया है।
- कठपुतली का प्रदर्शन करने वाला कहानी का वर्णन गद्यात्मक या काव्यात्मक रूप में करता है, जबकि कठपुतली का प्रदर्शन इसे दृश्य रूप प्रदान करता है।
- पौराणिक साहित्य, स्थानीय मिथकों और किंवदंतियों से संबंधित कहानियां प्राचीन भारत में कठपुतली प्रदर्शन का विषय थीं।

- भारत में मुख्य रूप से चार प्रकार की कठपुतली शैलियाँ हैं: धागा कठपुतली, छाया कठपुतली, छड़ कठपुतली और दस्ताना कठपुतली
- **धागा कठपुतली (String Puppetry):** धागा कठपुतली या मरियोनेट्स में धागे द्वारा जुड़े हुए अंगों को नियंत्रित किया जाता है। कुछ प्रसिद्ध धागा कठपुतलियां हैं:
  - कठपुतली, राजस्थान
  - कुनढेई, ओडिशा
  - गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक
  - बोम्मालट्टा, तमिलनाडु।
- **छाया कठपुतली (Shadow Puppetry):** छाया कठपुतलियाँ सपाट चित्र होती हैं जिसमें छाया निर्माण के लिए इसे एक परदे के सम्मुख रखा जाता है और इसके पीछे से तीव्र प्रकाश डाला जाता है। कुछ प्रसिद्ध छाया कठपुतलियाँ निम्नलिखित हैं:
  - तोगलु गोम्बेयेट्टा, कर्नाटक
  - तोलु बोम्मालट्टा आंध्र प्रदेश
  - रावण छाया, उड़ीसा
- **छड़ (रॉड) कठपुतली (Rod Puppetry):** छड़ कठपुतलियों दस्ताना कठपुतलियों का विस्तृत रूप है, लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है और उसी से संचालित होती है। कुछ प्रसिद्ध छड़ कठपुतलियाँ निम्नलिखित हैं:
  - पुत्तलनाच, पश्चिम बंगाल
  - उड़ीसा छड़ कठपुतली
  - यमपुरी, बिहार
- **दस्ताना कठपुतली (Glove Puppetry):** दस्ताना कठपुतलियों को भुजा, हाथ या हथेली कठपुतलियों के रूप में भी जाना जाता है। इसका सिर पेपर मेशे (कुट्टी), कपड़े या लकड़ी से बना होता है तथा गर्दन के नीचे से दोनों हाथ बाहर निकलते हैं और शेष शरीर के नाम पर केवल लहराता घाघरा होता है। कठपुतली चलाने वालों के द्वारा हाथों से कठपुतलियों की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया जाता है। उदाहरण: **पावाकुथू, केरल**।

2.3. थिएटर ओलंपिक

(Theatre Olympics)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भारत, **थिएटर ओलंपिक -"विश्व का सबसे बड़ा थिएटर उत्सव"** के 8वें संस्करण की मेजबानी कर रहा है। इसका आयोजन भारत के विभिन्न शहरों में किया जा रहा है।

थिएटर ओलंपिक(Theatre Olympics)

- 1993 में स्थापित थियेटर ओलंपिक, विश्व भर के प्रसिद्ध रंगमंच अभिनेताओं की बेहतरीन प्रस्तुतियों को प्रस्तुत करने वाला सबसे महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय थिएटर फेस्टिवल है।

भारत में पारंपरिक थियेटर के विभिन्न रूप

(Different Traditional Theatre Forms in India)

- भाण्ड-पाथेर (कश्मीर)
- स्वांग (हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि)

- नौटंकी (उत्तर प्रदेश)
- रासलीला (उत्तर प्रदेश)
- भवाई (गुजरात)
- जात्रा (बंगाल)
- माच (मध्य प्रदेश)
- भाओना (असम)
- तमाशा (महाराष्ट्र)
- दशावतार (कोंकण और गोवा क्षेत्र)
- **कृष्णाट्टम** (केरल का लोक थियेटर)
- **मुडियेट्टु** (केरल का लोक थियेटर)
- **कुटियाट्टम**(केरल)
- यक्षगान (कर्नाटक)
- तेरुकुत्तु (तमिलनाडु का लोक नाट्य)